ग्रन्थमाला 'बालसंस्कार' खण्ड २

स्वभावदोष दूर कर आनन्दी बनें !

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापना के उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

पू. संदीप गजानन आळशी

सहायक

श्री. राजेंद्र महादेव पावसकर

(भूतपूर्व शिक्षक, माध्यमिक विद्यामंदिर, सांताक्रूज [पू.], मुंबई.)

सनातन संस्था

卐 सनातन के ग्रन्थों की भारत की भाषाओं के अनुसार संख्या 卐

मराठी ३४५, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९८, हिन्दी १९५, गुजराती ६८, तेलुगु ४५, तमिल ४३, बांग्ला ३०, मलयालम २४, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

मई २०२४ तक ३६५ ग्रन्थों की १३ भाषाओं में ९६ लाख ६९ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थ के संकलनकर्ताओं का परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजी के आध्यात्मिक शोधकार्य का संक्षिप्त परिचय

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था' की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्ति के लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्ग की निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधना से १५.५.२०२४ तक १२७ साधकों को सन्तत्व प्राप्त तथा १,०५८ साधक सन्तत्व की दिशा में अग्रसर हैं ।

३. आचारधर्मपालन, देवता, साधना, आदर्श राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विविध विषयों पर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात' के संस्थापक-सम्पादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्र (ईश्वरीय राज्य) की स्थापना की उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र' की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन तथा उनका दिशादर्शन !

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी का साधकों को आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत बाळाजी आठवले
१८.५.१९९६

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन की ग्रन्थ-रचना की सेवा करने के साथ ही राष्ट्रजागृति एवं धर्मप्रसार करनेवाली प्रसारसामग्री के (सनातन पंचांग, धर्मशिक्षा फलक इत्यादि के) लिए लेखन करते हैं । साधना, राष्ट्र एवं धर्म सम्बन्धी नियतकालिक 'सनातन प्रभात' में प्रबोधनपरक लेखन भी करते हैं ।

अनुक्रमणिका

卐 अभिभावकों के लिए सन्देश ७

卐 भूमिका ८

卐 अभिभावको, बच्चों के नाम आध्यात्मिक अर्थयुक्त रखें ! १०

अध्याय १ : मन एवं स्वभाव क्या है ! १२

१ अ. बच्चो, मन का कार्य समझ लें ! १२

१ आ. 'स्वभाव' का निर्धारण कैसे होता है ? १२

अध्याय २ : स्वभावदोष क्यों हटाएं ? १३

२ अ. स्वभाव के गुण-दोषों का क्या परिणाम होता है ? १३

२ आ. स्वभावदोषों से होनेवाली साधारण हानि १३

२ इ. स्वभावदोषों से होनेवाली चूकें व उनके दुष्परिणाम १७

अध्याय ३ : स्वभावदोष कैसे दूर करें ? २२

३ अ. स्वभावदोष-निर्मूलन प्रक्रिया २२

३ आ. 'स्वभावदोष-निर्मूलन प्रक्रिया' आचरण में कैसे लाएं ? २३

अध्याय ४ : स्वभावदोष दूर करने की गति कैसे बढाएं ? ६०

४ अ. स्वभावदोष दूर करने के लिए किए जानेवाले अन्य प्रयास ६०

४ आ. स्वभावदोष-निर्मूलन प्रक्रिया का ब्यौरा किस प्रकार दें ? ६५

अध्याय ५ : 'स्वभावदोष-निर्मूलन प्रक्रिया' के कारण होनेवाले लाभ के उदाहरण ६९

५ अ. स्वभावदोष-निर्मूलन प्रक्रिया के कारण सनातन के बालसाधकों में हुए परिवर्तन ६९

卐 प्रस्तुत ग्रन्थकी असामान्यता समझ लें ! ७१

卐 बच्चो, 'आदर्श बालक' बनने हेतु आजसे ही प्रयास करें ! ७२

卐 संकलनकर्ताओंका वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं अन्य जानकारी ७३

देवता एवं देवालय दर्शन संबंधी सनातन के प्रकाशन

सनातन की देवतासम्बन्धी ग्रन्थसम्पदा

卐 शिव 卐 श्रीराम 卐 श्रीराम 卐 श्री गणपति

卐 श्रीकृष्ण 卐 हनुमान 卐 श्रीविष्णु 卐 श्री सरस्वती

卐 देवताओं की विशेषताएं एवं कार्य क्या हैं ?

卐 देवताओं की उपासना क्यों और कैसे करें ?

...इत्यादि के विषय में अध्यात्मशास्त्रीय जानकारी पाकर, देवताओं के प्रति भक्तिभाव बढाएं ! पृथ्वी पर कहीं भी न उपलब्ध, ऐसा ज्ञान अब सनातन के ग्रथों में !

भूमिका

अनेक बच्चों के मनानुसार न हो अथवा माता-पिता उनकी बात न मानें, तो वे चिढ जाते हैं, रूठ जाते अथवा निराश हो जाते हैं । ऐसे बच्चों को स्वयं को तथा उनके कारण दूसरों को भी, कष्ट होता है। क्रोध करना, उद्दण्डता से बोलना, झूठ बोलना आदि बुरे स्वभाव का प्रतीक हैं तथा प्रेमभाव, दूसरों की सहायता करना, संयम आदि बातें अच्छे स्वभाव का प्रतीक हैं । अच्छे बच्चे तो सभी को प्रिय होते हैं । किसी महापुरुष ने ठीक कहा है, 'जो सबको प्रिय होता है, वह भगवान को प्रिय होता है !' अपने दोष घटाते रहना, सन्तोष और आनन्द प्राप्त करने का सरल उपाय है !

इस ग्रन्थ में आलस्य, उद्दण्डता, अव्यवस्थितता आदि स्वभावदोषों से बच्चों की किस प्रकार हानि होती है; उनसे किस प्रकार की चूकें होती हैं; उन दोषों को दूर करने के लिए बच्चों को कैसी 'स्वसूचना' देनी चाहिए; चूक होनेपर कौन-सा प्रायश्चित लेना चाहिए आदि बातों का उदाहरण सहित विवेचन किया गया है ।

आज के प्रतियोगी युग में सफल होने के लिए (कैरियर बनाने के लिए) बौद्धिक क्षमता के साथ-साथ पूरे व्यक्तित्व का विकास होना भी आवश्यक है । स्वयं को हीन समझना, भय, चिन्ता, निराशा आदि स्वभावदोषों से मन दुर्बल बनता है । स्वार्थ, द्वेष, चिडचिडापन जैसे दोषों के कारण, सभी सुविधाएं होते हुए भी सुख-सन्तोष नहीं मिलता। जीवन में निरन्तर आनन्द में रहने के लिए स्वभावदोष दूर करने हेतु निरन्तर और लगन से प्रयास करना आवश्यक होता है । स्वभावदोष दूर होने पर बच्चों में आन्तरिक सुधार होनेपर ही खरे

अर्थों में व्यक्तित्व का विकास होगा ।

इस ग्रन्थ का अध्ययन करने से बच्चों के स्वभावदोष दूर हों, गुण बढें तथा उनके व्यक्तित्व का विकास होकर भविष्य आनन्दमय और सफल हो, यह श्री गुरु से प्रार्थना ! – संकलनकर्ता

अभिभावकों से नम्र विनती !

'स्वभावदोष-निर्मूलन प्रक्रिया' एक मानसिक उपचार-पद्धति है । बच्चों को इस विषय का न तो ज्ञान होता है और न अभ्यास । अधिकतर बच्चों को मन लगाकर कोई कार्य करने का अभ्यास भी नहीं रहता । 'दोष-निर्मूलन प्रक्रिया' में मन से निरन्तर संघर्ष करना पडता है । इसलिए बच्चों को यह प्रक्रिया आरम्भ में कठिन लगती है; परन्तु वस्तुतः यह सरल और आनन्ददायी है । अभिभावको, इस प्रक्रिया में यदि बच्चों को आपकी सहायता और आधार मिलेगा, तो उनमें इसके विषय में आत्मविश्वास निर्माण होगा, इसमें कणमात्र भी सन्देह नहीं है ।

संस्कृत भाषानुरूप हिन्दी के प्रयोग हेतु सनातनकी समर्थक भूमिका !

हिन्दी में उर्दू की भांति कुछ शब्दों के नीचे बिन्दु (नुक्ता) लगाते हैं, उदा. ह़ज़ार, जोड़, गाढ़ । संस्कृत देवभाषा है । सनातन संस्था उसे आदर्श मानकर, ग्रन्थों में शब्दों के नीचे बिन्दु नहीं लगाती । संस्कृत समान हिन्दी का प्रयोग करना अर्थात 'चैतन्य की ओर अग्रसर होना' । प्रत्येक व्यक्ति इसका आचरण कर 'स्वभाषा' रक्षार्थ अर्थात धर्मरक्षा के कार्य में सहभागी होकर अपना धर्मकर्तव्य निभाए !

– (सच्चिदानंद परब्रह्म) डॉ. आठवले